05. वड्ढत्थेरगाथा

थेर वड्ढ का जन्म भरुकच्छ के एक साधारण परिवार में हुआ था। उनका परिवार भगवान बुद्ध, उनके भिक्खु और भिक्खुणीसंघ के व्यवहार से काफी प्रभावित था। क्योंकि उनके परिवार में पहले से ही बुद्ध के विचारों के प्रति बहुत आदर सम्मान था। उनका परिवार तो भगवान बुद्ध का बहुत आस्थावान उपासक था। उनकी माता भगवान बुद्ध की इतनी श्रद्धा रखती थी कि यौवनावस्था में ही उन्होंने बालक वड्ढ को बचपन में ही अपने भाइयों को सौंपकर भिक्खुणी होना सहर्ष स्वीकार कर लिया था। वह धम्म और विनय में प्रतिष्ठित होकर अर्हत भी हो गई थी। वड्ढ ने अपनी मां का ही मार्ग अपनाकर

विचार करना और सत्य को जानना ब्राह्मणों का धर्म नहीं है। केवल परम्परा का पालन करते रहना ही उनका धर्म है।

भगवान बुद्ध जब सबसे पहले सारनाथ में धम्मचक्र प्रवर्तन करने के बाद उरुवेला में आये तो वहां उनकी नदी कस्सप नामक इस जटिल से भेंट हुई। भगवान बुद्ध उन्हें उपदेश देते है। तब वे प्रसन्न होकर, प्रभावित होकर अपने तीन सौ जटिल शिष्यों के साथ भगवान बुद्ध के पास प्रव्रज्या और उपसम्पदा प्राप्त कर लेते हैं। उसके बाद धम्म और विनय के अनुसार आचरण करके वे एक दिन परमशान्त अर्हतपद को पा लेते हैं। नाम उनका नदी कस्सप ही रहा, लेकिन वे अब वैदिक जटिल नहीं रहे थे। बल्कि बौद्ध भिक्खु हो गए थे। बाद में उन्होंने अपने अर्हतपद प्राप्ति पर अपना ध्यान केंन्द्रित करके इस उदान को गाया—

अत्थाय वत मे बुद्धो, नदिं नेरञ्जरं अगा।
यस्साहं धम्मं सुत्वान, मिच्छादिट्ठिं विवज्जयियिं।। 340।।

अर्थ—*मेरे कारण बुद्ध निरंजना नदी के तट पर आए। उनके धम्म को सुनकर मैंने मिथ्या दृष्टि को त्याग दिया।*

यजिं उच्चावचे यञ्ञे, अग्गिहुत्तं जुहिं अहं।
एसा सुद्धी'ति मञ्ञन्तो, अन्धभूतो पुथुज्जनो।। 341।।

अर्थ—*मिथ्या दृष्टि को शुद्धि मानकर मैंने कई यग्यों का अनुष्ठान किया और अग्निहोत्र किया, तब मैं अन्धा था, अग्यानी था।*

दिट्ठिगहनपक्खन्दो, परामासेन मोहितो।
असुद्धिं मञ्ञिसं सुद्धिं, अन्धभूतो अविद्दसु।। 342।।

अर्थ—*(मैं) मिथ्या दृष्टिरूपी जंगल में पड़ा था, सम्प्रदायवाद में उलझा था। अशुद्धि को शुद्धि समझ रहा था, अन्धा था, नासमझ था।*

मिच्छादिट्ठि पहीना मे, भवा सब्बे विदालिता।
जुहामि दक्खिणेय्यग्गिं, नमस्सामि तथागतं।। 343।।

अर्थ—*(अब) मेरी मिथ्यादृष्टियां नष्ट हो गई, सभी दुक्ख नष्ट हो गए। दान के उपयुक्त अग्नि की उपासना करता हूं, तथागत को नमस्कार करूंगा।*

मोहा सब्बे पहीना मे, भवतण्हा पदालिता।
विक्खीणो जातिसंसारो, नत्थि दानि पुनब्भवोति।। 244।।
... नदीकस्सपो थेरो...।

अर्थ—*मेरे सभी मोह टूट गए हैं, सांसारिक तृष्णा हट गई है। जन्म रूपी संसार कट गया है, (अब) मेरे लिए फिर जन्म नहीं है।*